पुस्तक का नाम - निबंध माला
अ०दि०-पत्र
शीर्षक - अनेकता में एकता: भारतीय साहित्य में
लेखक - जानकी बल्लभ शास्त्री
द्वितीय खण्ड - राष्ट्रभाषा हिन्दी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न :- 'अनेकता में एकता: भारतीय साहित्य में' निबंध के माध्यम से लेखक क्या सन्देश देना चाहता है?

उत्तर :- महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री एक उच्च कोटि के समीक्षक के साथ-साथ महान निबंधकार भी हैं। इन्होंने अपने निबंध 'अनेकता में एकता: भारतीय साहित्य में' के द्वारा समस्त पाठकों को यही सन्देश देना चाहते हैं कि विविधताओं से भरे हुए हमारे देश में एकता बनी रहे। एक से अनेक हो जाऊँ यही भारतीय भावना का मूल स्वर है। यही भावना हमारी अनेकता में एकता को प्रतिबिम्बित करता है। लेखक का कहना है कि प्राचीन काल से ही साहित्यिक और सांस्कृतिक परम्परा हमें एकता के सूत्र में बाँधने की प्रेरणा देती आ रही है।

प्रश्न :- प्रकृति के सम्बन्ध में लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर :- निबंधकार सांख्य दर्शन में वर्णित 'प्रकृति' के स्वरूप में अलौकिक रूप का दर्शन करते हुए उसके महत्व को प्रतिपादित करता है। उसका कहना है कि प्रकृति त्रिगुणात्मक है। महाकवि कालीदास, बाणभट्ट आदि कहते हैं कि सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय के देवता ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश कार्य भेद होने पर भी एक ही ब्रह्म के तीन नाम हैं। ये तीनों, तीन गुणों के प्रतीक हैं जिनमें एक ही प्रकृति सामंजस्य स्थापित करती है। समस्त भारतीय कलाविद सकल कलाओं में एक ही सौन्दर्य की अनुभूति करते हैं। उनका यह भी कहना है कि भले ही रस के नौ भेद हो पर उन सबों की मूल आत्मा अखण्ड आनन्द ही है।

शेष आगे —

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण अवतरणों की व्याख्या -
शास्त्री प्रथम खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र - राष्ट्रभाषा हिन्दी

" वह अपना रूप और यौवन उन्हें न दिखाना चाहती थी, क्योंकि यह देखने वाली आँखे न थी। वह उन्हें इन रसों का आस्वादन करने के योग्य ही न समझती थी। कली प्रभात-समीर ही के स्पर्श से खिलती है। दोनों में समान सारल्य है। निर्मला के लिए वह प्रभात समीर कहाँ था।"

उत्तर -
सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से उद्धृत है। इसके लेखक हिन्दी उपन्यास के महान रचनाकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। प्रस्तुत गद्यांश में प्रेमचन्द जी अधेड़ मुंशी तोताराम से विवाह हो जाने के पश्चात् निर्मला की मनःस्थिति का वर्णन कर रहे हैं। मुंशी तोताराम निर्मला के साथ बहुत मधुर व्यवहार करते थे। वह भी उनसे मधुर व्यवहार करने लगी थी। वह उनसे शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा न रखकर उनके प्रति पिता की श्रद्धा रखती थी क्योंकि वे उसके पिता के उम्र के थे। मुंशी तोताराम की सज-धज का नाटक उसे असह्य लगता था।

व्याख्या - निर्मला में सामान्य युवतियों की भाँति उमंग थी। वह साज-श्रृंगार भी करती थी और अपनी यौवन की प्रशंसा भी बटोरना चाहती थी। परन्तु उसके समक्ष पति रूप में वृद्ध मुंशी तोताराम थे। उम्र का यह अन्तर उसे यौवन का प्रदर्शन करने से रोक देता था। वह चाहती थी कि कोई हम उम्र का युवक उसके सामने हो। जिस प्रकार कली प्रातः समीर के स्पर्श से ही खिलती है, उसी प्रकार निर्मला भी किसी हम उम्र युवक के सामने खिल सकती थी। परन्तु वृद्ध तोताराम की पत्नी के रूप में उसकी सारी उमंगे दब कर रह जाती थी। वह तोताराम को मन से पति स्वीकार करने के लिए विवश थी।

विशेष - मुंशी प्रेमचन्द ने बड़े ही सहज ढंग से एक युवती के हृदय की अभिलाषाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।
भाषा और शैली दोनों ही प्रभावशाली है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 02/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ।

प्रश्न:- अनेकता में एकता किस प्रकार सम्भव है?

उत्तर:- अनेकता में एकता की उपलब्धि 'समन्वय' से होती है। यह समन्वय भीतरी वस्तु है। सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में सर्व प्रथम इसकी झलक मिलती है। अन्य ग्रंथों में भी समन्वय के महत्व को प्रमुखता दी गई है। लेखक, कबीर, गोस्वामी तुलसीदास, तुकाराम आदि कवियों का उदाहरण देकर पाठकों को यह समझाने का प्रयास करता है कि सबों ने देश की एकता और अखण्डता के लिए समन्वय को आवश्यक माना है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 02/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरखसेना, पूर्णियाँ